INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

VOLUME 2, ISSUE 10 October, 2014

ISSN-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

जीवन कौशल, मूल्य और व्यक्तिगत विकास

डॉ. प्रज्ञा श्रीवास्तव, डॉ. देवेन्द्र अग्रवाल

सारांश

जीवन मूल्य वर्तमान शताब्दी की वह सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति तथा समाज को जीवन के विभिन्न रूपों में प्रभावित करती है। मानव को अन्य जीवित प्राणियों से अलग बनाना ही उसका मूल्य सिद्धान्त है। मनुष्य और मूल्यों को अलग नहीं किया जा सकता । प्रकृति ने हर मनुष्य को अपार क्षमताएं प्रदान की हैं। प्रकृति प्रदत इन श्शक्तियों का प्रयोग यदि व्यक्ति समग्रता से कर ले तो वह विश्व की सर्वोच्च प्रतिमा बन सकता है।

जीवन मूल्य मानवजीवन को सरल, सुगम और वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार आनंदपूर्वक जीवन जीने की कला सिखाती है। व्यक्ति को पूरी अवस्था के साथ जीने, संसार में अधिकत्तम आनंद प्राप्त करने तथा ईश्वरीय चेतना में रहकर शाश्वत स्वत्रंता से जीवनयापन करने में समर्थ बनाती है। आज की नयी पीढ़ी पाश्चात्य् संस्कृति के कुप्रभाव से ग्रस्त हो मानव जीवन के मूल्यों को नष्ट कर रही है। जीवन सुखों-दुखों का सम्मिश्रण है। वास्तव में जीवन विविध रंगो का एक खूबसूरत गुलदस्ता है जिससे हमें अपने व्यक्तित्व को महकाने की कोशिश करनी चाहिए।

मनुष्य जीवन बहुत खूबसूरत है और इसकी खूबसूरती तभी तक संभव है जब तक वह अपने जीवन को सहज, सरल और सफल रूप से जी पाता है। अत: हमें व्यक्तित्व विकास के लिए कुछ इस तरह के याद अपने अंदर जागृत करने होंगे।

''पावन गंगा उतरी धरापर पौरूष की वह खान तुम्ही हो, वज्र बनावन हेतु तजे निज पान दाधिची महान् तुम्ही हो, शक्ति अकूत की कूत नहीं कर पाते थे जो हनुमान तफम्ही हो हे प्राणी वर्ग मेरे, इस देश के तारनहान तुम्ही हो।'

जीवन मूल्य वर्तमान शताब्दी की वह सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति तथा समाज को जीवन के विभिन्न रूपों में प्रभावित करती है। मानव को अन्य जीवित प्राणियों से अलग बनाना

ही उसका मूल्य सिद्धान्त है। मनुष्य और मूल्यों को अलग नहीं किया जा सकता । मूल्य मनुष्य की चाहिए की भावना को मूर्तरूप देते हैं जो विश्वास की विशेषता को प्रकट करते है। जीवन मूल्य के सिद्धान्त और अच्छाई के अध्ययन ने मूल्य शब्द को महत्वपूर्ण व विस्तृत अर्थ प्रदान किया है जिसके आठ कार्य क्षेत्र है -नश्वरता, धर्म, कला, विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति कानून और परम्परा। जीवन मूल्यों ने आज औधोगिक विकास, आर्थिक संरचना, राजनैतिक जीवन, सामाजिक पूर्ण निर्माण और व्यक्तित्व के विकास की एक दूसरे में इस तरह सम्बन्ध कर दिया है कि कुछ समय पहले तक इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यही कारण है कि आधुनिक समाज में जीवन मूल्यों को सामाजिक नियंत्रण से एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रूप में देखा जा सकता है।

स्टेनली के अनुसार ''मूल्यों का निर्माण मनुष्य की रूचि के अनुसार होता है, अतः मूल्यों के अन्तर्गत मनुष्य द्वारा इच्छित वस्तु की परख अथवा मूल्यांकन भी आता है।''

तात्पर्य यह है कि मुनष्य वस्तुस्थिति विचार, आदर्श लक्ष्य एक दृष्टिकोण को परख कर उनका मूल्यांकन कर निर्णय लेता है। यह वही प्रक्रिया है जब मनुष्य अपने मूल्य का निर्माण करता है। मूल्य का अर्थ हमेशा सकारात्मक होता है। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह देशकाल के अनुरूप अपनी समस्त इच्छाओं के बीच किन मूल्यों को अधिक महत्व देता है।

प्रकृति ने हर मनुष्य को अपार क्षमताएं प्रदान की हैं। प्रकृति प्रदत इन श्शक्तियों का प्रयोग यदि व्यक्ति समग्रता से कर ले तो वह विश्व की सर्वोच्च प्रतिमा बन सकता है। जब व्यक्ति जन्म लेता है तो वह सुरक्षित हाथो में होता है। रिश्तो की मजबूत डोर उसके लिए सुरक्षा कवच बन तैयार रहती है। फिर भी उसे संधर्ष की दुनिया में अपना अस्तित्व, अपनी पहचान बनानी ही होती है और जीवन की संधषपूर्ण डगर पर चलते हुए चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। संधर्षो एवं स्पप्नों की पूर्ण करने में यदि कोई चीज मददगार बनती है तो वह है व्यक्ति का आत्मविश्वास जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं जीवन के संघर्षो को समझने और जूझने की क्षमता।

आज की दूनिया में सिद्धान्त विरोध की तार्किकता और विवेक के बिना जिन्दगी नहीं रहती है। यहॉ हमें एक प्रसंग याद आता है - सिद्धान्त बदलने को आतुर एक चिड़िया ने फैसला किया कि

इस बार मौसम बदलते ही हमेशा की तरह दक्षिण नहीं जाना है किन्तु जल्दी ही मौसम इतना ठण्डा हो गया कि उसने दक्षिण की ओर उड़ना शुरू कर दिया । कुछ देर के बाद उसके पंखों पर बर्फ जम गई बर्फ से बेहोश चिड़िया एक खेत में गिर गई। खेत से गुजरती गाय ने उस पर गोबर कर दिया, चिड़िया की आवाज सुनकर एक बिल्ली ने गोबर साफ किया और चिड़िया को चट कर गई। यह छोटी सी कथा हमें जीवन कौशल सिखा कर उसके मूल्य को समझा सकती है कि हर गोबर डालने वाला आपका शत्रु नहीं हो सकता और गोबर से निकालने वाला आपका मित्र नहीं होता है। जीवन कौशल एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें यदि व्यक्ति शामिल हो जाए तो उसका सम्पूर्ण अस्तित्व एक ऐसे धरातल पर खड़ा हो जाता है, जहॉ वह जीवन की समस्त चुनौतियों का सामना करने के लिए तत्पर होता है।

जीवन मूल्य मानवजीवन को सरल, सुगम और वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार आनंदपूर्वक जीवन जीने की कला सिखाती है। व्यक्ति को पूरी अवस्था के साथ जीने, संसार में अधिकत्तम आनंद प्राप्त करने तथा ईश्वरीय चेतना में रहकर शाश्वत स्वत्रंता से जीवनयापन करने में समर्थ बनाती है। आज की शिक्षा एक पक्षीय शिक्षा है जो सिर्फ व्यक्ति के बौद्धिक विकास पर केन्द्रित है, जबकि शिक्षा का उद्देश्य सर्वागीण विकास होना चाहिए।

आज का जीवन संघर्ष, आपाधापी, आधुनिकरण, अभाव, दूषित, लोकतांत्रिक परिवेश राजनीतिक मूल्यों का क्षरण, अशान्ति, श्शोषण एवं भय से ग्रस्त है जिनका नैतिक पतन और मूल्यों का ह्रास भारत वर्ष में हुआ है उतना किसी अन्य राष्ट्र में नहीं, कारण समाज, औधोगिकरण, विज्ञान एवं तकनीकी का अभूत पूर्व विकास है जिसने मस्तिष्क और ह्दय के बीच बड़ा फासला बना दिया है। आज की नयी पीढ़ी पाश्चात्य् संस्कृति के कुप्रभाव से ग्रस्त हो मानव जीवन के मूल्यों को नष्ट कर रही है।

जीवन सुखों-दुखों का सम्मिश्रण है। हमारी सबसे बडी विडम्बना यह है कि हम सुखद पलों में खूब खुश होते है और यह भूल जाते है कि दुख भी हमारा साथी है। दुखद पलों का सामना हमें धैर्यपूर्वक करना चाहिए। वास्तव में जीवन विविध रंगो का एक खूबसूरत गुलदस्ता है जिससे हमें अपने व्यक्तित्व को महकाने की कोशिश करनी चाहिए। गुलदस्ते में लगे इन रंग बिरंगे फूलों से यदि

हम जीवन के हर पल को सजाने का कार्य करे तो इससे वातावरण भी सुगन्धित हो उठेगा। किसी ने सच ही कहा

वह पथिक क्या, पथिक की राह कुशलता क्या,

जब राह में बिखरे शूल ना हो।

वह नाविक क्या, नाविक की धैर्य कुशलता क्या,

जब धाराएं प्रतिकूल न हो।

साधारण जीवन तो सब जी लेते है। जीवन की विषयताओं से लड़े बिना यदि कोई यह कहें कि हमनें जीवन का लक्ष्य पा लिया है तो यह संभव नहीं है। हमारे बुजुर्गों ने यह बताया है कि जिस उद्देश्यों का मार्ग संघर्षो से नहीं गुजरता है, उनकी महानता संदिग्ध है। वास्तव में कठिनाईयों के बीच गुजरे बिना मनुष्य के व्यक्तित्व में पूर्णतया निखार नहीं आ पाता। जीवन मूल्यों को अपनाते हुए संघर्षमय जीवन मनुष्य के व्यक्तित्व को तराशकर हीरे की तरह चमकाता है। नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, अध्यात्मिक मूल्य युक्त परिस्थितियों से संघर्ष करने पर एक अमूल्य शक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है जिसे आत्मबल आत्मशक्ति कहते है। ऐसे व्यक्तित्व का विकास किसी संस्थान में सीखकर नहीं किया जा सकता ना ही आराम की जिंदगी बिताने से होता है। जीवन संघर्षो से जीवन मूल्यों में एक ऐसी चमक पैदा होती है जिससे जीवन पथ के अंधकार और कॉंटे सहज ही दूर हो ही जाते है। अपने व्यक्तित्व को तपाकर ही निखारा जा सकता हैं जीवन के मूल्यों में नैतिक गुण जैसे - प्रेम, सहयोग, बन्धुत्व, ईमानदारी, त्याग, अनुशासन और दायित्व आदि का विकास हमारे व्यक्तित्व में चार चॉंद लगा देता है। इस प्रकार हम देखते है कि एक व्यक्ति के व्यक्तिव के विकास में इन कौशलों एवं मूल्यों का होना आवश्यक है। हम मूल्य परक शिक्षा, नैतिक शिक्षा आदि की बाते करते हैं पर यदि हम वास्तव में अपने किशोर-किशोरियों को जीवन की सही दिशा देना चाहते हैं, तो हमे यह समझना होगा कि किशोरवस्था की समस्याएं किसी किशोर या

किशोरी द्वारा व्यक्तित्व रूप से जिसका समाधान इन्ही की उम्र के स्तर पर जाकर जीवन मूल्यों और जीवन कौशल के माध्यम से सम्भव है।

मनुष्य जीवन बहुत खूबसूरत है और इसकी खूबसूरती तभी तक संभव है जब तक वह अपने जीवन को सहज, सरल और सफल रूप से जी पाता है। अतः हमें व्यक्तित्व विकास के लिए कुछ इस तरह के याद अपने अंदर जागृत करने होंगे।

''पावन गंगा उतरी धरापर पौरूष की वह खान तुम्ही हो, वज्र बनावन हेतु तजे निज पान दाधिची महान् तुम्ही हो, शक्ति अकूत की कूत नहीं कर पाते थे जो हनुमान तफम्ही हो हे प्राणी वर्ग मेरे, इस देश के तारनहान तुम्ही हो।''

संदभ ग्रन्थ सूची

१. *जितेन्द्र सिंह बियोला (२०१०) शिक्षामित्र, शिक्षामित्र, भार्गव पब्लिकेशन, आगरा।*
२. *पाण्डेय, राजबली, (१९९५) हिन्दु संस्कार, चौखम विधाभवन, वाराणसी।*
३. *त्रिवेदी, सीमा (२००६), शिक्षण पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान।*
४. *भारतीय परिवेश का मूल्य विकास पर प्रभाव (२००९), भारतीय शोध पत्रिका, लखनऊ।*
५. *शिक्षा के साथ संस्कार भी आवश्यक (२००९), कांडल शतपत्र पत्रिका, राजस्थान।*